4

अथर्ववेद संहिता साहित्य

भारतीय ज्ञान गङ्गा के स्रोत वेद ही है। इस प्रकार दूसरा कोई भी ग्रन्थ नहीं है जो अपनी प्रभा से केवल स्वय ही प्रकाशित न हो अपितु अपनी प्रभा से सम्पूर्ण भारतीय वाङ्मय को भी प्रकाशित कर दे। 'विद्यमान है धर्म आदि पुरुषार्थ जहाँ वे वेद है' ऐसा बह्वृक प्रातिशाख्य में कहा है। चारों वेदों में अथर्ववेद सबसे अर्वाचीन है। ऋग्वेद के बहुत से विषयों पर यहाँ दुबारा आलोचना की है। ऋग्वेद के ही बहुत से मन्त्र यहाँ वैसे ही स्वरूप में लिखे है। अथर्ववेद में केवल अपने स्वयं के मन्त्र जो अन्य वेदों में प्राप्त नहीं होते है इस प्रकार के मन्त्र बहुत ही कम है। वहाँ अथर्ववेद की संहिता साहित्य अत्यधिक महत्त्वपूर्ण है। उपरे के पाठ में ऋक् आदि तीन वेदों की संहिता विषयों पर चर्चा हुई अथवा उन वेदों की संहिता को समझा। इस अध्याय में अथर्ववेद की संहिता विषय पर आलोचना प्रस्तुत है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- अथर्ववेद के साहित्य विषय को समझ पाने में;
- अथर्ववेद रूप वृक्ष की अनेक दिशाओं में फैली हुई शाखाओं के विषय को जानने में;
- अथर्ववेद के मूल प्रतिपाद्य विषयों को समझ पाने में; और
- स्त्री-राजा आदि के वैदिक कर्म के विषयों को जानने में।

4.1 भूमिका

वेदों में अथर्ववेद का स्थान सबसे उपर है। ऋक् आदि तीनों वेद कम फल देने वाले है। क्या चारों वेदों में अथर्ववेद बहुत विशिष्ट फल देता है। जब ऋग्वेद आदि तीनों वेद परलोक का फल

टिप्पणियाँ

देते है, तब यह अथर्ववेद इहलोक का भी फल देता है। जीवन को सुखी करने के लिए जिन साधनों की अपेक्षा होती है, उनकी सिद्धि के लिए इस वेद में अनेक अनुष्ठानों का विधान है। पतञ्जलि ने यद्यपि इस वेद की नौ शाखा का उल्लेख किया फिर भी वर्त्तमान में पैप्पलाद, और शौनक संज्ञा की दो शाखा ही प्राप्त होती हैं। अथर्व संहिता की शौनकशाखा और पैप्पलादशाखा लम्बे काल से ही प्रकाशित है।

किसी भी यज्ञ को सम्पूर्ण रूप से निष्पन्न करने के लिए चार ऋत्विज होते हैं। उनमे ब्रह्मा इस नाम का ऋत्विग् यज्ञ का अध्यक्ष होता है। इसका प्रधान कार्य सभी कार्यो पर अच्छी प्रकार से निरीक्षण करना तथा होने वाली त्रुटी को हटाना। इसलिए ब्रह्मा सभी वेदों को जानने वाला होना चाहिए। उसको मन से बल से भी सम्पन्न होना चाहिए। किन्तु उस ब्रह्मा का प्रधानभेद अथर्ववेद ही होता है। ब्राह्मण ग्रन्थों में ब्रह्मा के महान् गौरव का अनेक जगह वर्णन है। गोपथ ब्राह्मण का (३/२) कथन है की तीनों वेदों के द्वारा यज्ञ का अन्तर पक्ष को ही शुद्ध करते हैं। ब्रह्मा मन से यज्ञ के अन्य पक्ष का संस्कार करता है। जैसे –

'स वा एष त्रिभिर्वेदैर्यज्ञस्यान्यन्तरः पक्षः संस्क्रियते।
मनसैव ब्रह्मा यज्ञस्यान्यतरं पक्षं संस्करोति॥' **(गोप. ब्रा. ३/२)**

पुरोहित को अथर्ववेद का ज्ञान भी आवश्यक होता है, जो राजा की शान्ति तथा पौष्टिक कार्य का सम्पादन अथर्ववेद से ही करता है। अथर्ववेद के परिशिष्ट में लिखा है कि – जिस राज्य में अथवा राजा के जनपद में अथर्ववेद का ज्ञाता रहता है उस राष्ट्र में उपद्रव आदि नहीं रहते हैं और वह राष्ट्र भी शीघ्र ही वृद्धि को प्राप्त होता है। इसी प्रकार इस लोक के साधनों का और परलोक के विषयों का प्रतिपादन करने से अथर्ववेद का वैदिक संहिता में अपना विशिष्ट स्थान है।

अथर्ववेद के उपलब्ध अनेक नामों में अथर्ववेद, ब्रह्मवेद, अङ्गिरोवेद, अथर्वाङ्गिरसवेद, आदि मुख्य नाम है। 'अथर्व'–शब्द की व्याख्या तथा उसके निर्वचन को निरुक्त में तथा और गोपथब्राह्मण में प्राप्त होते है। 'शर्व'–धातुः कुटिलता अर्थ में तथा हिंसावाचक है। इसलिए ही अथर्व शब्द का अर्थ होता है – अकुटिल वृत्ति और अहिंसावृत्ति से मन की स्थिरता को प्राप्त करने वाला। इस व्युत्पत्ति के योग का प्रतिपादन करने वाले अनेक प्रसङ्ग इस वेद में है। ब्रह्म कर्म का प्रतिपादन करने से अथर्ववेद 'ब्रह्मवेद' इस नाम से जाना जाता है। अथर्ववेद का यह ही ब्रह्मवेद नाम से जानने का मुख्य कारण है।

'अथर्वाङ्गिरस'–इस पद की व्याख्या से प्रतीत होता है, की जो यह दो ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्रों का समूह प्रस्तुत किया है। अथर्व नाम के ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्र शान्ति और पुष्टिकर्म युक्त है। और अङ्गिरस द्वारा दृष्ट मन्त्र तो अभिचार (मारने, मोहित और वशीकरण आदि–को करने में) होते है। इस कारण दो प्रकार के मन्त्रों के होने के कारण वायु पुराण में (६५।२७) तथा ब्रह्माण्ड पुराण में (२।१।३६) अथर्ववेद को दो शरीर शिर वाला कहते हैं। इस कथन से स्पष्ट होता है

की अथर्ववेद में दो प्रकार के मन्त्र सङ्गृहीत हैं। शान्ति पौष्टिक कर्म का प्रतिपादन करने वाले मन्त्र तथा अभिचार कर्म का प्रतिपादन करने वाले मन्त्र हैं। आङ्गिरस के द्वारा मारण, मोहन, स्तम्भन, विद्वेष, वशीकरण, और उच्चाटन प्रख्यात छः कर्मों का विधान विशेष रूप से देखना चाहिए, वैसे ही नारदीय पुराण में भी कहा है –

'तत्र चाङ्गिरसे कल्पे षट्कर्माणि सविस्तरम्।
अभिचारविधानेन निर्दिष्टानि स्वयम्भुवा।।'

तैत्तिरीय ब्राह्मण में (३/१२/९/१) 'अथर्वणामङ्गिरसां प्रतीची' इस पद में अथर्व अङ्गिरस का मिला हुआ स्वरूप वर्णित है। सम्भवतः इन ऋषियों द्वारा दृष्ट मन्त्रों का समूह अलग सत्ता को भी धारण करता है। इस दृष्टि से गोपथब्राह्मण का एक प्रकरण में 'अथर्व वेद सिद्ध होता है' और इसी प्रकार 'अङ्गिरस वेद भी इस प्रकार का वाक्य प्राप्त होता है (११/५ ११/१८)। शतपथब्राह्मण में भी इन दोनों का उल्लेख प्राप्त होता है (१३/४/३/२)। सभी जगह अधिकांश अङ्गिरस का ही अभिधान प्राप्त होता है। उससे इसी ऋषि के महत्व को जाना जाता है। इससे जाना जाता है की इस वेद में पहले शान्ति पौष्टिक मन्त्रों की सत्ता थी उसके बाद आभिचारिक मन्त्रों का सन्निवेश हुआ।

अथर्ववेद को अनेक प्रकार के विचार से जाना जाता है कि दो धाराओं के मिश्रण का परिणाम स्वरूप यह फल है। इनमे एक धारा है अथर्व धारा और दूसरी अङ्गिरा धारा है। अथर्व-ऋषि द्वारा दृष्ट मन्त्र शान्ति और पौष्टिक कर्म के साथ सम्बद्ध है। इसका सङ्केत भागवत पुराण में भी प्राप्त होता है – 'अथर्वणेऽदात् शान्तिं यया यज्ञो वितन्यते' इति (३/२४/२४)। अङ्गिरा धारा का आभिचारिक कर्मों के साथ सम्बद्ध है। जिससे मनुष्यों में यह वेद प्रिय हुआ। शान्ति कर्म का सम्बद्ध होने से अथर्व का सम्बन्ध श्रौतयाग के प्रारम्भ से ही है, बाद में आभिचारिक कर्म के साथ उसका सम्बन्धवश होने से राजा के पुरोहित वर्गो के लिए यह वेद बहुत उपयोगी हुआ। ऋक् यजु, साम से अथर्व की भिन्नता स्पष्ट ग्रन्थों में प्राप्त होती है।

वेदत्रयी जहाँ अलौकिक फलदाता है, वहाँ अथर्ववेद लौकिक फलदाता है। इस सन्दर्भ में यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए की जयन्त भट्ट ने न्यायमञ्जरी में अथर्ववेद की ही प्राथमिकता की उदगोषणा की है – ''वहाँ चारों वेद में, प्रथम अथर्ववेद'' है। नागरखण्ड ने भी इसको आदि वेद कहते है। और भी प्रमाणित करते है कि अथर्ववेद ही सभी लौकिक कार्यों की सिद्धि के लिए मुख्य रूप से प्रयुक्त होता है। इसी कारण ही इसे आदि वेद कहते है, जयन्तभट्ट ने तो न्यायमञ्जरी में इस विषय में विस्तार सहित विचार किया है।

राजकार्यो में भी अथर्ववेद का विशेष महत्त्व है। राजा के लिए शान्ति पौष्टिक कर्म की तुलना में पुरुष आदि के दान की महती आवश्यकता होती है। इस प्रकार के कर्मों का विधान प्रधानता से अथर्ववेद में ही प्राप्त होता है। इस विषय में पुराण, स्मृत्ति आदि ग्रन्थों में बहुत प्रमाण उपलब्ध होते हैं। विष्णुपुराण का स्पष्ट कथन है कि – ''पुरोहित के शान्तिक और पौष्टिक आदि कर्म

टिप्पणियाँ

इस अथर्ववेद से ही जाने जाते है। मत्स्य पुराण का कथन है - पुरोहित अथर्व मन्त्र में और ब्राह्मण में निपुण होना चाहिए। वैसा ''पुरोहितं तथा अथर्वमन्त्र-ब्राह्मण-पारगम्'' इति। कालिदास के कथन से भी इस कथन की पुष्टि होती है। कालिदास के द्वारा वशिष्ठ मुनि के लिए 'अथर्वनिधि:' इस पद का विशेषण दिया है, जिसका यह तात्पर्य है - रघुवंश उद्भव के कुलपुरोहित मुनि वशिष्ठ ने अथर्व मन्त्रों का तथा उनके क्रियाकलापो का भण्डार थे (रघु. १/५९)। राजा अज अथर्ववेद मन्त्रों के द्वारा गुरु वशिष्ठ से अभिषिक्त होकर शत्रुओं के लिए अपराजेय हुए। यहाँ कालिदास ने वशिष्ठ को 'अथर्ववेत्ता' ऐसा कहना चाहते है। वैसे हि रघुवंश में - 'स बभूव दुरासद: परैर्गुरुणाऽथर्वविदा कृतक्रिय:'। इति। (८/४)। अथर्ववेद भाष्यभूमिका में लिखा है की अथर्ववेद का ज्ञाता शान्ति कर्म परायण जिस राष्ट्र में रहता है वह राष्ट्र उपद्रव रहित होकर निरन्तर बढ़ता रहता है। वैसे हि-

''यस्य राज्ञो जनपदे ह्यर्वाशान्तिपारगा:।
निवसत्यपि तद्राष्ट्रं वर्धते निरुपद्रवम्॥
तस्माद्राजा विशेषेण ह्यथर्वाणं जितेन्द्रियम्।
दान-सम्मानसत्कारैर्नित्यं समभिपूजयेत्॥'' इति।

अत यह कह सकते है कि राजपुरोहितों को अथर्ववेद के मन्त्रों का तथा उससे सम्बद्धित अनुष्ठानों का ज्ञान आवश्यक होना चाहिए। इसी कारण ही अथर्ववेद इहलौकिक (इहलोक) कहलाता है, तथा अन्य तीनों वेद पारलौकिक (परलोक) के लिए कहलाते है।

4.2 अथर्ववेद की शाखा

पस्पशाह्निके में ''नवधाऽऽथर्वणो मत:'' ऐसा लिखकर पतञ्जलि ने अथर्ववेद की नौ शाखा कही है। पुराणों के अनुसार वेदव्यास महोदय ने जिस शिष्य को अथर्ववेद पढ़ाया है उसका नाम सुमन्तु था (श्रीमद्भागवत में १२/७/१-३, वायुपुराण में ६१/४९-५३, विष्णुपुराण में ३/६/९-१३)। भागवत में इसकी विशाल चर्चा है की सुमन्तु इस अभिचार प्रधान वेद के मुख्य प्रचारक थे। वे ही इस 'दारुणमुनि' इस उपाधि से विभूषित थे। अथर्ववेद की शाखाओं का विस्तार पुराणों में वर्णित है। किन्तु भागवत में (१२/७/१) स्कन्ध का नाम निर्दिष्ट नहीं है। इस पुराण में सुमन्तु के ही दो शिष्यों का वर्णन कहा पथ्य और देवदर्श है। दोनों के मध्य में देवदर्श- यह नाम ही प्रमाणिक है ऐसा प्रतीत होता है। क्योंकि अथर्वण महानारायण उपनिषद् में देवदर्शी इस नाम का अथर्व शाखा के साथ सम्बन्ध स्वीकार करते है। उस देवदर्श अथवा देवदर्शी इस नाम का ही उपयुक्त होता है ऐसा प्रतीत होता है। विष्णु पुराण के अनुसार से पथ्य के तीन शिष्यों के नाम क्रमश जाबालि, कुमुद तथा शौनक ये तीन थी। प्रमाण के अनुसार से पथ्य के तीन शिष्य थे - जाजलि, कुमुद, और शौनक। देवदर्श के चार शिष्य थे - ब्रह्मवलि, पिप्पलाद, शौष्कायणि, और शौक्लायनि। इन शिष्यों में शौनक के शिष्य बभ्रु तथा सैन्धवायन कहा है। इन मुनियों के द्वारा अथर्ववेद का विशेष प्रचार हुआ। प्रपञ्चहृदय, चरणव्यूह, सायणभाष्य आदि के उदाहरणों में यद्यपि शाखाओं की सङ्ख्या

अलग नहीं है फिर भी इनमें नामों में भिन्नता दिखाई देती है। इनकी तुलना करने पर निम्नलिखित ज्ञान होता है –१ पिप्पलाद, २ स्तौद, ३ मोद, ४ शौनकीय, ५ जाजल, ६ जलद, ७ ब्रह्मवेद, ८ देवदर्श, ९ और चारणवैद्य। इन अथर्ववेद की नौ शाखाओं में अब शौनक पैप्लाद नाम की दो ही शाखा प्राप्त होती है।

4.2.1 पैप्लाद शाखा

पिप्पलाद मुनि एक महान् अध्यात्म वेत्ता ऐसा प्रतीत होती है। स्वाध्यात्म विषयों का संशय निवारण के लिए सुकेशा, भारद्वाज आदि छः मुनि उसके समीप में आने का उल्लेख प्राप्त होता है। उनके द्वारा दिए उत्तरों भी प्रश्नोपनिषद् में सुरक्षित है। प्राचीन काल में इस संहिता की विशेष ख्याति थी। इसके दो ग्रन्थ थे। प्रपञ्चहृदय का कथन है की – पैप्लाद शाखा की मन्त्र संहिता बीस काण्डों में विभक्त है, तथा उसके ब्राह्मण में आठ अध्याय है। पैप्लाद संहिता की एक प्रतिलिपि शारदा लिपि में कश्मीर में उपलब्ध होती है। वह पाण्डुलिपि कश्मीर राजा के द्वारा जर्मन विद्वान राथ महोदय के लिए उपहार रूप में भेजी थी। १९०१ ईस्वी में उसके लेख अमेरिका से प्रकाशित हुआ था। महाभाष्य के अनुसार से– 'शन्नो देवीरभीष्टय आपो भवन्तु पीतये। शंयोरभिस्रवन्तु नः' अथर्ववेद का यह प्रथम मन्त्र है, किन्तु अभी प्रचलित शौनक संहिता के छठे सूक्त का यह प्रथम मन्त्र है। गुणविष्णु से ज्ञात होता है कि यह मन्त्र पैप्लाद शाखा का आदि मन्त्र था (शन्नो देवी ..... अथर्ववेद का यह आदि मन्त्र पिप्पलाद दृष्ट है – छान्दोग्यमन्त्र भाष्य में)। इससे ही ज्ञात होता है कि महाभाष्य काल में इस संहिता की विशिष्ट ख्याति थी।

4.2.2 मौद शाखा

महाभाष्य में (४/१/८६), शाबरभाष्य में (१/१/३०) इस मौदमुनि का उल्लेख प्राप्त होता है। मौद शाखा विशेषज्ञ अथवा जलद शाखा विशेषज्ञ पुरोहित जिस राष्ट्र में रहता है, उस राष्ट्र का विनाश होता है –

'पुरोधा जलदो यस्य मौदो वा स्यात् कदाचन।
अब्दाद् दशभ्यो मामेभ्यो राष्ट्रभ्रष्टं भविष्यति॥'

इससे यह शाखा कम प्रचलित थी ऐसा बोध होता है।

4.2.3 शौनक शाखा

आजकल प्रचलित अथर्व संहिता और गोपथ ब्राह्मण इसी ही शाखा के है। तौद, जालज, ब्रह्मवेद, देवदर्श, आदि संहिता तो केवल नाम मात्र से ही प्रसिद्ध है। अथर्व की अन्तिम शाखा चारणवैद्य के विषय में कौशिक सूत्र में व्याख्या की है। वायुपुराण से ज्ञात होता है कि इस शाखा के छः हजार छब्बिस (६०२६) मन्त्र थे, किन्तु अभी तक यह संहिता प्राप्त नहीं है।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. अथर्ववेद आमुष्मिक के साथ अन्य क्या फल देता है?
2. महर्षि पतञ्जलि के मत में अथर्ववेद की कितनी शाखा है?
3. किसी भी यज्ञ के सम्पूर्ण रूप से पूर्ण करने के लिए कितने ऋत्विज होते हैं?
4. ब्रह्मा- नाम के ऋत्विज का प्रधानकार्य क्या है?
5. अथर्ववेद के अनेक अभिधानों में मुख्य कौन से है?
6. आजकल अथर्ववेद की कितनी शाखा प्राप्त होती हैं?
7. ब्रह्मवेद कौन है और कैसे कहलाता है?
8. अथर्व शब्द का अर्थ क्या है?
9. पथ्य के तीन शिष्य कौन थे?
10. शौनक के शिष्य कौन थे?

4.2.4 अथर्ववेद की विषय विवेचना

अथर्ववेद की विषय विवेचना अन्य वेदों की अपेक्षा नितान्त गूढ़ और विलक्षण है। इस वेद में वर्णित विषयों का विभाजन तीन प्रकार से कर सकते हैं - १. आध्यात्मिक, २. आधिभौतिक, ३. और आधिदैविक। अध्यात्म प्रकरण में मुख्य रूप से ब्रह्मजीव विषय पर और परमात्मा विषय पर वर्णन है। उसके बाद आश्रमों का भी पर्याप्त निर्देश प्राप्त होता है। आधिभूत प्रकरण में राजा, राज्य, राज्यशासन और सङ्ग्राम आदि का वर्णन है। आधिदैवत प्रकरण में अनेक देवताओं का, अनेक यज्ञों का, और काल आदि के विषय में सङ्कलन है। इसी प्रकार स्थूल विवेचना के बाद विस्तृत विवरण है। जैसे -

4.2.5 भैषज्य सूक्त

इस प्रकरण में रोगों के चिकित्सा सम्बन्धी मन्त्रों का तथा विधि विशेषणों का अन्तर्भाव होता है। रोगों की उत्पत्ति अनेक दु:ख राक्षस, भूत, पिशाच आदि के उपद्रव से ही होती है। अत इस प्रकरण के अनेक मन्त्रों में ऊपर वर्णित उपद्रवों के शांत करने का उपाय है। इन मन्त्रों की सहायता से किये हुए अभिचारों का विशेष वर्णन कौशिक सूत्र में है। अनेक रोगों के लक्षण तथा उस रोग से उत्पन्न शारीरिक विकार का आर्युवेदिक दृष्टि से विशाल वर्णन है। अथर्ववेद में -'तक्मा:' यह बुखार का ही नाम है। इस सन्दर्भ में अथर्ववेद का कथन है कि बुखार पीडित लोग पित्त से परेशान रहते है। अत: कुछ मन्त्रों में बुखार निमित्त प्रार्थना है। जैसे - हे ज्वर ! तुम हट जाओ, अथवा रोग को छोड़कर मूजवत अग्नि के समान महावृष आदि दूरस्थ प्रान्त में जाओ (५/२५/७/८)। बलास(क्षय आदि) रोग (६/१४), गण्डमाला (६/८३), यक्ष्मा (६/८५) आदि रोगों को दूर करने

के लिए वरुण नाम की औषधि सेवन का उपयोग प्राप्त होते है। खांसी (६/१०५) तथा दन्तपीडा आदि रोगों का तथा उनकी औषधी का वर्णन अत्यधिक सुंदर रीति से अथर्ववेद में वर्णित है। सांप के विष नाश के लिए अनेक उपाय वर्णित है। एक सूक्त में (५/१३) असित-तैमात-आलिङ्गी-विलिङ्गी-उरु-गूल आदि सांपो का नाम उल्लेखित है। अनेक प्रकार की औषधियों का तथा अनेक पेड़ों की प्रशंसा में भी अनेक मन्त्र यहाँ है।

4.2.6 आयुष्य सूक्त

दीर्घ आयु के लिए अनेक प्रकार के प्रार्थना परक मन्त्र इस भाग में दिए है। इन मन्त्रों का विशेष प्रयोग पारिवारिक उत्सव के समय पर होता था। बालकों के मुण्डन पर, किशोर को गोदान में (प्रथम क्षौर कर्म में) तथा उपनयन संस्कार में इस मन्त्र का उपयोग होता है। इस सूक्त में सौ शरद ऋतु तक तथा सौ हेमन्त ऋतु तक जीवन के लिए अनेक प्रकार की मृत्यु से रक्षा के लिए अनेक रोगों से रक्षा के लिए प्रार्थना प्राप्त होती है। अथर्ववेद में जीवन काल को बढ़ाने के लिए रक्षासूत्र के धारण का विशेष विधान प्राप्त होता है। इस रक्षासूत्र धारण से प्राणि पूर्ण स्वास्थ्य को प्राप्त होता है ऐसा जाना जाता है। सत्रहवें काण्ड का एकमात्र सूक्त यहाँ इस सूक्त में आता है।

4.2.7 पौष्टिक सूक्त

यहाँ घर निर्माण के लिए, क्षेत्र जोतने के लिए, बीज बोने के लिए, अन्न उत्पादन के लिए, पुष्टि के लिए, व्यापार के कारण विदेश जाने के लिए और अनेक प्रकार के आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की है। इस विषय में एक सुंदर सूक्त का (अथर्व. ४/१५) वर्णन। इस सूक्त में वर्षा का अत्यधिक रमणीय, और साहित्यिक दृष्टि में सुंदर वर्णन है।

4.2.8 प्रायश्चित्त सूक्त

इन सूक्तों में प्रायश्चित्त का विधान उपलब्ध होता है। चरित्र की त्रुटी में धार्मिक विरोध का तथा अन्य विधिहीन आचरणों का विधान है - जैसे ज्ञात अथवा अज्ञात अपराधो के हेतु से, धर्मशास्त्र के द्वारा निषेध का, विवाह का कारण, ऋण लेने वाले के प्रति द्वेष भावना हेतु से, बड़े भाई के बिना विवाह हेतु से जो अपराध होते हैं, उनको दूर करने के लिए यहाँ प्रायश्चित्त का विधान है। इस सम्बन्ध में इस प्रकार के मन्त्र है, जो शारीरिक दुर्बलता से, मानसिक त्रुटि से, दु:स्वप्न, अपशकुन आदि का निराकरण करें, और उनसे हटा देते है। वर्तमान युग के ही समान उस युग में भी अशुभ स्वप्न में मनुष्यों का विश्वास था। उसको दूर करने के लिए अनेक प्रकार के उपायों का वर्णन मन्त्रों में है।

4.2.9 स्त्रीकर्म विषय सूक्त

विवाह विषय पर और प्रेम विषय पर बहुत से सूक्त इस वेद में है। इन सूक्तों का उस समय के समाज के स्वरूप को जानने में विशेषरूप से सहायक होते है। इन सूक्तों में पुत्र उत्पन्न के लिए

और उस उत्पन्न हुए शिशु की रक्षा के लिए सुंदर प्रार्थना भी प्राप्त होती है। इस प्रसङ्ग में चौदहवां काण्ड विशेषरूप से सहायक है। इसी ही क्रम से अथर्ववेद के मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण आदि क्रियाओं के बहुत प्रयोगों का वर्णन है। कौशिक सूक्त में नारी प्रेम सम्पादन के लिए अनेक प्रकार की आभिचारिक क्रिया का वर्णन है।

4.2.10 राजकर्म विषय सूक्त

राजा से सम्बद्ध बहुत सूक्त अथर्ववेद में प्राप्त होते है। इन सूक्तों के अध्ययन से उस समय की राजनैतिक स्थिति का विशाल वर्णन प्राप्त होता है। शत्रु के विनाश के लिए प्रार्थना के साथ सङ्ग्राम का तथा उसके उपयोगी साधनों का वर्णन है जैसे- रथ, दुन्दुभि, शङ्ख आदि का विशेष विवरण और संग्राम की दृष्टि से भी अथर्ववेद के महत्त्व को सूचित करते हैं। अथर्ववेद का 'क्षत्रवेद' इस नामकरण का यह ही कारण है। उस युग में प्रजा ही राजा का चुनाव करती थी। यहाँ मनुष्यों के साथ अश्विन, मित्रावरुण आदि द्वारा राजा के चुनने का वर्णन है। अन्ध सूक्त में (३/३) ज्ञात होता है की देश से निकाला हुआ राजा दुबारा राज्य में सम्मान पूर्वक प्रतिष्ठित हुआ। सङ्ग्राम भूमि पर जाने के लिए वीरो को उत्साहित करने के लिए दुन्दुभि का वर्णन अत्यधिक सरल और वीररस पूर्ण है। पांचवे काण्ड के दसवें सूक्त में कवि की दृष्टि से और मनोहर भावों के प्रदर्शन से अत्यधिक रोचक, सरल तथा अभिव्यञ्जनात्मक है। दुन्दुभि की गर्जना को सुनकर शत्रु युवती का भयानक शस्त्र सङ्घर्ष के मध्य में अपने पुत्र को लेकर पलायन की प्रार्थना भी बहुत ही कारुणिक है। (अथर्व. ५/२०/५)।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. अथर्ववेद में वर्णित विषयों के कौन कौन से भेद हैं?
2. रोगों की उत्पत्ति कैसे होती है?
3. अथर्ववेद में तक्मा: यह किसका नाम है?
4. जीवनकाल के बढ़ाने के लिए किसका विशेष विधान है?
5. विवाह विषयक और प्रेम विषयक सूक्त कहाँ प्राप्त होते हैं?
6. क्षत्रवेद इस नाम से अथर्ववेद कैसे प्रसिद्ध है?

पाठ का सार

वेदों में अथर्ववेद ने वेदान्त के समान स्थान का अधिकार किया है। ऋग्वेद आदि तीनों वेद थोड़ा फल देने वाले हैं। विशेष रूप से अथर्ववेद में लौकिक विषयों की अधिक चर्चा प्राप्त होती है। अथर्ववेद के ब्रह्मवेद-अङ्गिरावेद-अथर्वाङ्गिरसवेद आदि नाम भी प्रसिद्ध है। 'अथर्व'-शब्द की

व्याख्या तथा उसका निर्वचन निरुक्त में (११/२/१७) तथा गोपथ ब्राह्मण में (१/४) प्राप्त होती है। इस अथर्ववेद की अनेक शाखा प्राप्त होती है। उनमे लगभग सभी जगह लौकिक के ही विषयों पर वर्णन प्राप्त होते हैं।

इस वेद में वर्णित विषयों का विभाजन तीन प्रकार कर सकते है –१ आध्यात्मिक, २ आधिभौतिक, ३ और आधिदैविक। और वहाँ विविध सूक्तों में लौकिक विषयों पर राजकर्म आदि का विधान है। जैसे – भैषज्य सूक्तों में विविध रोगों का वर्णन तथा उनके नाश के लिए विविध उपायों का वर्णन है। आयुष्य सूक्तों में दीर्घायु के लिए प्रार्थना की है। यहाँ विहित सूक्तों का विशेष प्रयोग पारिवारिक महोत्सवों के अवसर पर होता है। और यहाँ सौ शरद ऋतु तक तथा सौ हेमन्त ऋतु पर्यन्त जीवन के लिये प्रार्थना है। पौष्टिक सूक्तों में घर निर्माण के लिए, क्षेत्र को जोतने के लिए, बीज बोने के लिए, अन्न उत्पादन के लिये और अन्य गृहस्थ कर्मो के लिए प्रार्थना है। यहाँ विविध अपराधो के प्रायश्चित्त के लिए प्रार्थना है। और भी यहाँ प्रेम विषय और विवाह विषय पर विविध सूक्त उपलब्ध होते है। अनेक राजकर्म विषय सूक्त भी यहाँ प्राप्त होते है। जैसे – शत्रु के विनाश के लिए प्रार्थना के साथ सङ्ग्राम का तथा उसके उपयोगी साधनों का विशेष विविरण प्राप्त होता है। इस कारण से अथर्ववेद का अन्य नाम 'क्षत्रवेद' भी है।

पाठांत प्रश्न

1. पैप्लाद शाखा विषय पर लिखिए।
2. भैषज्य सूक्त विषय पर विस्तार से लिखिए।
3. प्रायश्चित्त विषय पर अथर्ववेद में जो कहा है उसे विस्तार से लिखिए।
4. स्त्रीकर्म विषय पर अथर्ववेद में जो कहा है उसे विस्तार से लिखिए।
5. राजकर्म विषय पर अथर्ववेद में जो कहा है उसे लिखिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1

1. इहलोक का फल भी देते है।
2. नौ।
3. चार।
4. ब्रह्मा नाम के ऋत्विज का प्रधान कार्य है सभी कार्यो में अच्छी प्रकार से निरीक्षण करना तथा होने वाली त्रुटी से हटाना।

टिप्पणियाँ

5. अथर्ववेद, ब्रह्मवेद, अङ्गिरोवेद, अथर्वाङ्गिरसवेद, आदि नाम मुख्य है।
6. दो शौनक शाखा और पैप्लाद शाखा।
7. ब्रह्म कर्म का प्रतिपादन करने से अथर्ववेद 'ब्रह्मवेद' कहलाता है।
8. अकुटिलता वृत्ति से और अहिंसा वृत्ति से मन की स्थिरता प्राप्त करने वाला व्यक्ति।
9. पथ्य के तीन शिष्य थे – जाजलि, कुमुद, और शौनक।
10. शौनक के दो शिष्य है, बभ्र और सैन्धवायन।

4.2

1. १ आध्यात्मिक, २ आधिभौतिक, ३ और आधिदैविक।
2. रोगों की उत्पत्ति अनेक दु:ख राक्षस भूत पिशाच आदि के उपद्रव से ही होता है।
3. बुखार का नाम।
4. रक्षासूत्र धारण के।
5. स्त्रीकर्म विषय सूक्तों में।
6. शत्रुओं के विनाश के लिए प्रार्थना के साथ सङ्ग्राम का तथा उसके उपयोगी साधनों के वर्णन से अथर्ववेद 'क्षत्रवेद' इस नाम से प्रसिद्ध है।

॥ चौथा पाठ समाप्त॥